

DPN S321

Title: शिव शक्ति समर सत्व महामाया स्तव ŚIVA ŚAKTI SAMARA -
SATVA ^{MAYA} MATIA STAVA

Run. No. 6012

Cat. No.

Micro. No.

Subject *Hymn* स्तव

Religion: Hindu / Bauddha

Language: Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. / *Newa direction*

Size in cms. 9.5 x 2.2

Folios 24, Lines (in a page) 7

Compl. / Incompl.

3 folios are missing
Chapt. / act / verses 1-30

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script: New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material: palmleaf / paper / *thyasaphu* /

Condition: fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon:

श्रीसंवत्ता मण्डलान्ते कमपथन हितमनंद शक्तिः सुभिमा, सृष्टं न्याये चतु-
रुक्तं अकुल कुलगात्रं पंचकं चान्यत्रको चत्वारपंच कोन्यं पुनरपि-
चतुरिषोत्र ^{शान्ता} विदोषो

CENTIMETERS

15

10

5

0

CENTIMETERS

5

10

15

20

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

२७ शिवेशान्ति समस्त मातुल मदा माया स्ताव

१४॥ संवत्सरेषु लाने कामयथ नदिता नंदन किं ॥ सुस्मिता, सुखं न्यायवत्
 स्तंभकूलकूलगतं, पंचकं चान्यथा यथा वाप्येयकानां यत्तत्र यिदुर्वषा
 १५ ॥ अविनिष्ठा, दद्यात्सुस्मिता, सुखं न्यायवत्, विन्दुयथा सुखं
 वृद्धकामासु यत्तत्तलमनितकलावकुदवीकमान्या, शीतार्थं यत्तदुपयानव
 नवकलितं, यत्तत्तदुपयानव, गित्तसिद्धावता यत्तत्तदुपयानव, गित्तसिद्धावता
 नवाधिकार, नवाधिकार, गित्तसिद्धावता यत्तत्तदुपयानव, गित्तसिद्धावता
 नानागणयितु कामयदसकलैषां गणना कामान्, अदोद्धमलुलाव

यत्तत्तदुपयानव, यत्तत्तदुपयानव, यत्तत्तदुपयानव, यत्तत्तदुपयानव, यत्तत्तदुपयानव
 मलुलकूनयव, सुस्मिता, सुखं न्यायवत्, विन्दुयथा सुखं, यत्तत्तदुपयानव, यत्तत्तदुपयानव
 ५ ॥ अविनिष्ठा, दद्यात्सुस्मिता, सुखं न्यायवत्, विन्दुयथा सुखं, यत्तत्तदुपयानव, यत्तत्तदुपयानव
 जननम्, नमस्ति नृपवत्, सुखं न्यायवत्, विन्दुयथा सुखं, यत्तत्तदुपयानव, यत्तत्तदुपयानव
 सुखं न्यायवत्, विन्दुयथा सुखं, यत्तत्तदुपयानव, यत्तत्तदुपयानव, यत्तत्तदुपयानव
 वलकवसदिनं, सुस्मिता, सुखं न्यायवत्, विन्दुयथा सुखं, यत्तत्तदुपयानव, यत्तत्तदुपयानव
 ततिवय, दक्षिण, सुखं न्यायवत्, विन्दुयथा सुखं, यत्तत्तदुपयानव, यत्तत्तदुपयानव

20

15

10

सयुक्तं त्वयि नमः अनविष्टं द्यौः तस्या (ग) कामयुक्तं मदनकलियुक्तं
 सर्वसिद्धालयं ॐ द्यौः तिका नार्कसमस्तं यत्र नमः सिद्धकली ॥ वं कुं
 कुं गविधूरं लं मध्यादि विगं यत्र नमः सुखकला । विन्दुयुक्तं यत्र यः
 को नित्या नन्दस्य युक्तं तदयं लिमथर्न यत्र कात्र विरिञ्चं ग्लुविद्यां
 गमयगम्यं अनुरवविमलं तस्यापीथललाठं नवकार्यं समस्तं लि
 मलयजानानि नृद्वयं किं तुरुदा ॥ नृनगस्तदवदवी अकूलकूलमयं
 नन्दधरियसिद्धा ॐ ग्लुद्वयं विन्दुरुता यत्र यत्र रुचली सिद्धिदि

5

0

5

10

15

20

25

CENTIMETERS

याद्ययुक्तं द्यौः नित्यं कृत्या लुपका रगवति गुरुगम ॥ नन्दधरयसिद्धा
 ॐ कृद्वनितगतकोमा खयगिरा कूलन ॥ श्रीकृद्विकाख्या नमामि ॥
 ॥ नृसन्नातमनूमा गन अन्नायगदवगा दिव्यमयी वि ॐ कालः सि १६
 दानाययकिरिगा तुस्तिरुतगुदावासः वरु ॥ श्वदकदम्वकं सैक
 तमवितीयाका अम्बाकुरुसनिः वरु ॥ श्वदयल्लया कः रुदामकान
 रं वरु ॥ गमगुमनूका देवी वासमा गनयुक्तं लयः अन्नाययकिरिगा
 मधिकान ॐ कानः अन्नाययकिरिगा कानः स्तिरिगी कामयुक्तं

कीर्ति स्थिति निवृत्तः सिद्धिः (स्थे वा तु सागत्र) मुक्ता रत्न मय दवाणि
जा जानि नि कला कर्मः धारुण धात्र रु दनः न्यासं कृत्वा कर्म स्याः यु
जिना सिद्धि दत्तः स्वसिखायानि वदयत ॥ ॥ वन्द सदा सकल क
लिक सा ल रूतं कृष्ण वनत्र कपाल कदम्ब माला । खड्ग गज चक्र वल्लि
ढक कादि रुक्मिणी शक्ति गणितु व (व) यत्र वल्लि साया ॥ ॥ श्री गणेश
नवतु कनाथ ॐ गिय सिद्धि कन्द मूत्रा विजन का ज नक्षत्र म क रु ॥ गोवि
सूत ४४ कि नू भो कल नाद धना पायात्सत्र क वसन्ना निखि वाहना व

४॥ ॥ सिद्ध वसा र्द्ध म द मूक्ति तत्र क क मू निजी यना यन यथा धन दत्त
लुक् ॥ विरुक्त भवत्र माद क साधु मूर्ति पायाद्वयै ग नय नि सकलाः
थदाता ४॥ ॥ ॐ नमो भूत मरु माय सु कृ ददं यत्रायत्र ॥ न काकि
ना विष्णु धर्म नादाख विन्दु मालिनि ॥ ॥ ॥ अदहाय समुत्पन्नै अवल
विष्णु धर्मिणि मरु क लु लिनिनी ह्यु दं सम धा यव स्मि त ॥ २॥ ॥ म मूय्या
जि म धर्म यो मया यियत्रायत्र ॥ ॐ कात्र विद्यदावर्क रुका या द्वा द्व
युयिनि ॥ ३॥ वालाग्र जगत्त धा गुक् अ न नै वा द्य यया द का या द्वा कला

अथ यद्वा किं उक्तमाशितं ॥ ५ ॥ सकला खमहा माय वयदला कयुजि
 नी नुके कनागिमधुसूक्त मम्मभके क रुदिनि ॥ ७ ॥ अथ पुंशालला द
 वि रुदिनि वस्तुन्युगा विदुलगा निराद वि रुजु क क ठिला कमि
 ॥ ८ ॥ अथ द्वा विष्णु मूद ॥ ९ ॥ अथ सदा निवः प्रतीय महायना
 पादमूलव वस्तिता ॥ १० ॥ गेलो क जननिद वि तमस्तु दिव्य नूपिली ॥
 जायि हल मधुसूक्त मलालं गनु नूपिली ॥ ११ ॥ विदुमधु गतद वि कूः
 ठिल यार्द्ध यद्विक उषात्र क लिकारास द्वादश का वलम्विनि ॥ १२ ॥

उमाखरु हत गेवि द्वादश दिव्य वर्यस ॥ १३ ॥ न्या न्या गवा वस्तु हं सारथ्या
 लधु त्रिलि ॥ १४ ॥ अथ मारथ यमाद वि दकि लो रु वगमिलि नामा गडुस
 मूली रत्न मधुसूक्त यवादि लि ॥ १५ ॥ हल्लेख यमा नन्द गाल मूक्ति यवकि
 री ताद यल्लि कसं यष्ट गुल्ल य क समन्विता ॥ १६ ॥ सुलेख यम रुसं ॥
 दधर्मा धर्म यष्ट यष्ट काय कात्र ल कण्ठ ल गिष्ट य नाद विष्ट रु ॥ १७ ॥ यनाय
 यय व लुद्ध यतन सा यती कृष्ट सर्व वल धनिद वि गुञ्ज गल गि विष्ट री
 ॥ १८ ॥ गकि मूल महा दिव्य वी उ वी य समन्विता अगनी यमहा माय सीमा

बार्हवतात्रिनि ॥ ११ ॥ ऊयायविऊयायव ऊयनि याययाजिता । उम्ब
 यूयाऊमभक्त नमस्तयायभायनि ॥ १२ ॥ वन्द्यमास्तु कविदवि, धातुभक्त
 यवस्तु । रामनिगकि सुलन, मरुयूहसमन्वित ॥ १३ ॥ उमल्लिख
 मलिगोवि मायार्यनुयवाहिति । स्वकुन्दरवविदविकाधउमरुसुव
 वि ॥ १४ ॥ यश्च गवर्धनपुष्पक, लयपूजायकारिता । अमृताश्चैत्रपुष्पक
 नमस्तु कान्तरेव वि ॥ १५ ॥ दक्षकलविशूर्जिङ्ग, नावकाक्षिरुयानन ।
 नमामिदवदवलिभूषास्तथावपुषिलि ॥ २० ॥ जालामुखिवंगमवति,

उमादविम्वसति । योगिनियग्रायादवी, गर्भलीलक्षि सुवस्थति ॥ २१ ॥ ह
 सुहस्रबाहुगदवि, गमसूखीगकिमालिनी । काष्ठागासुरगदवि, दुर्गा
 कात्यायनीतथा ॥ २२ ॥ निखकि न्नासमाख्याता, वकानुकाशुवायया । वा
 द्रीमारुस्थयायव, कोमात्रीवेषवीतथा ॥ २३ ॥ वायादिदेवमारुन्दी, यामू
 यामूलुलरुयानना । यागसिलिदिदवलि, कुलायकविरुषिर्ग ॥ २४ ॥
 ॥ अष्टाष्टकधत्रीदवि, लक्ष्म्ययदुपुषिलि । त्रिन्दीर्घवगथाग्रया, याम्या
 नेसखवावली ॥ २५ ॥ वायियायवकोर्वी, नैऋतीसमूदाहता । प्रयागव

20

15

10

5

0

CENTIMETERS

रुखा, यागिनी स्नानवर्तलं ॥ तदनुसाधका कलाञ्जलिमा निमिद्धा
 सायावदनु समग्रधिक्रियागिनी ॥ सागमस्तु विनिकामयिकोय
 वस्तु यस्याहुयाञ्च वलयं कज्जमकदवः ॥ तदनुसाधका सिद्धा न
 ननु कलयागिनी ॥ तदनुसाधका याथो ययान्यकलदीप्तिता ॥
 ददिनः सुखिना सक्तु, सुखातिः सक्तु ददिम ॥ पुसादनु सदागारं य
 प्रलंजावक्षत्रिलं ॥ ॥ जूना निवेगतिविध
 नमधमान्, माहाधक यययिधिनिस्तविदगो ॥ कर्मस्याविद कुतमः

धन ३

विकाररुमो, विग्नइ होमिव सुधादिनिवावसानं ॥ ॥ जूहिसम
 ॥ दुकारं वायवी उंगद यत्रिबनू जक्याणि गदुर्दु, कारं वक्ष्ये नयकं गद
 यत्रिबनू मं वक्षित्री उंगदं ॥ ॥ न्द्विन्दुं लयानं सिगजमलत्रनं वक्षित्री वक्ष्या
 वं वक्षं, दक्षकदुनिर्हं दक्षकिकलमलं मन्त्रुत्तं दिवायं ॥ ॥ धीरवत्त
 न्दने दिवायं, गम्भाद्यं मन्त्रुत्तं ॥ ॥ जूहिसमं ललाटार्कं यन्दनं यनिगृह्णी ॥
 ॥ ॥ सिन्धु ॥ वीजं वक्षी मलावी वक्षी वक्षु मन्त्रुत्तं ॥ ॥ विलाक्या कर्मणी वक्षी
 सिद्धनायक मन्त्रुत्तं ॥ ॥ माहकनी ॥ ॥ विलाक्या मन्त्रुत्तं ॥ ॥ जूहिसमं ललाटार्कं यन्दनं यनिगृह्णी

15

20

25

20

मा ३

कनी ७

15

10

5

0

5

10

15

20

25

CENTIMETERS

रुंउनीसद्योविधि सुमयमजिसावाहयसुमरुननीध्वसिनीकाकिनीनी।
 नकाहमाननानीगिअणकिअतासर्वमङ्गलसुकासादवीभाहनीयंदिज
 ०गमिसं सर्वसंप्रदियायु॥ ॥संभन॥सिद्धिद्वैदधियावनवसकलसं
 धूर्त्तवन्द्याजर्मसंवाप्यंयकात्रर्णजिउयनसंस्वार्थकामयदा।दीक्षाय
 विनकात्रजिउयनयस्यसदावधिकर्मसायंजाहुंरुकुडध्वनस्यरुगया
 नृणांमुसदाजाहुव॥ ॥स्नान॥नानायुष्मसूर्गधामिमात्माद्यांस्वमाद
 यं।॥॥काष्ठशिद्धिदंरुहुयुष्मात्राहनमूर्कर्म॥ ॥श्रीगणेशायनमः॥ ॥

अथधर्मसालाप्रतिष्ठायापत्रियाधियाय॥ ॥दिनयातीनयी०युजाकाय,मालतीनस्वया
 उवादकयाय॥ ॥हु(थकाकूअधिवासन,थकाकू,वाक्कल,रूदीसीआवाद,थकाली
 नकीन,थकालीनायकादिदकीस्यालिलुसियाचर्ककीनयाय॥विधि(थहयवादका
 दियाय॥पाव,जाताकस्केनसुंकात्रवायं,कापाठनरूहसिजालकात्रनासतस्य
 इमकावाय॥दववाकायकस्यइमजानक॥हातापुत्राहितऊऊमानादिनकरका॥
 गारीससुचिसुआ,गयरीऊययथप्रधानी॥ ॥गारीसस्यावासकृवालरुवनसद
 अवनित्यक्रियावनक॥सुर्थादयकानस्यरुमनुपनयीवननेमस्यकाठासवा

20

15

10

5

0

5

10

15

20

25

CENTIMETERS



कनादिपनिष्ठातिवायकं रुमानन ॥ ॥ मन्दपद्मावसद्वातपूजायाय ॥ अमुमं सुयाऊ
 यमंकल्य ॥ विघ्ननिवागनार्थं गले ॥ अदि पंचलाकयात्वादि नवग्रहद्वौ ॥ अलाकया
 ल अष्टविंतीवीप्रहृतीषू ॥ जयस्तवकं वादि पूजनादी निमंप्रार्थ्य ॥ ॥ आवायादिव
 निर्विय ॥ विघ्नहनवलिविथ हातान ॥ ॥ पंचगव्यसाधन ॥ अर्घ्यपात्रसाधन ॥ रत्नसू
 दि ॥ शिवरुक्तकनल ॥ स्नानखड्गसाधनं ॥ शिपूजा ॥ मन्दप ॥ अमधन ॥ शिवभक्तिव
 नासन ॥ स्नानखड्गप्रदान ॥ ^{यं हिला वन} शिवभक्ति प्रमन ॥ शिवासनपूजा ॥ रंगलिंगीक
 नलं ॥ दानपूजा ॥ कललपूजा ॥ यग्यसिंहासनपूजा ॥ प्रार्थना ॥ अष्टरुन प्रनामः ॥

सिंहासनावभाहन ॥ पुष्पराजनं ॥ विधि ॥ थठ कृष्णदियग्नयाय ॥ हृथ ॥ थठ द्वा
 नादिकललशंदि लार्चनं ॥ ॥ आदि १० ग्रह १० नृत्तुं जयादि २ मूर्ति ॥ अमपू
 नू शिवभक्ति ॥ यद्रूपकली ॥ सूचनाग ॥ श्रीलक्ष्मीर्थदिल ॥ ॥ अमसयलिंग वास्तुपा
 ॥ अमग्रस ॥ खगनधालि ॥ मानकापूजा ॥ धनसूक्तस्यं रुलिनकाय द्वाष्ट विथक ॥
 अर्थप्रदासाधनस ॥ वनसाधनं ॥ बलिकादतसासूवाल क्ताय ॥ यथा कर्मसंप्रति
 ष्ठायावि ॥ अमयाय ॥ ॥ ॥ अमप्रतिष्ठाकृतवग्रलि ॥ आयाली नजीनकं थं काली नकीन
 नलं सावकं नसत्य द्वातल इकास्यं ॥ यग्ययाऊरुनसगनिर्माहनादि सगुल ॥

20

15

10

5

0

5

10

15

20

25

CENTIMETERS



20

15

10

5

0

CENTIMETERS

5

10

15

20

25



20

15

10

5

0

5

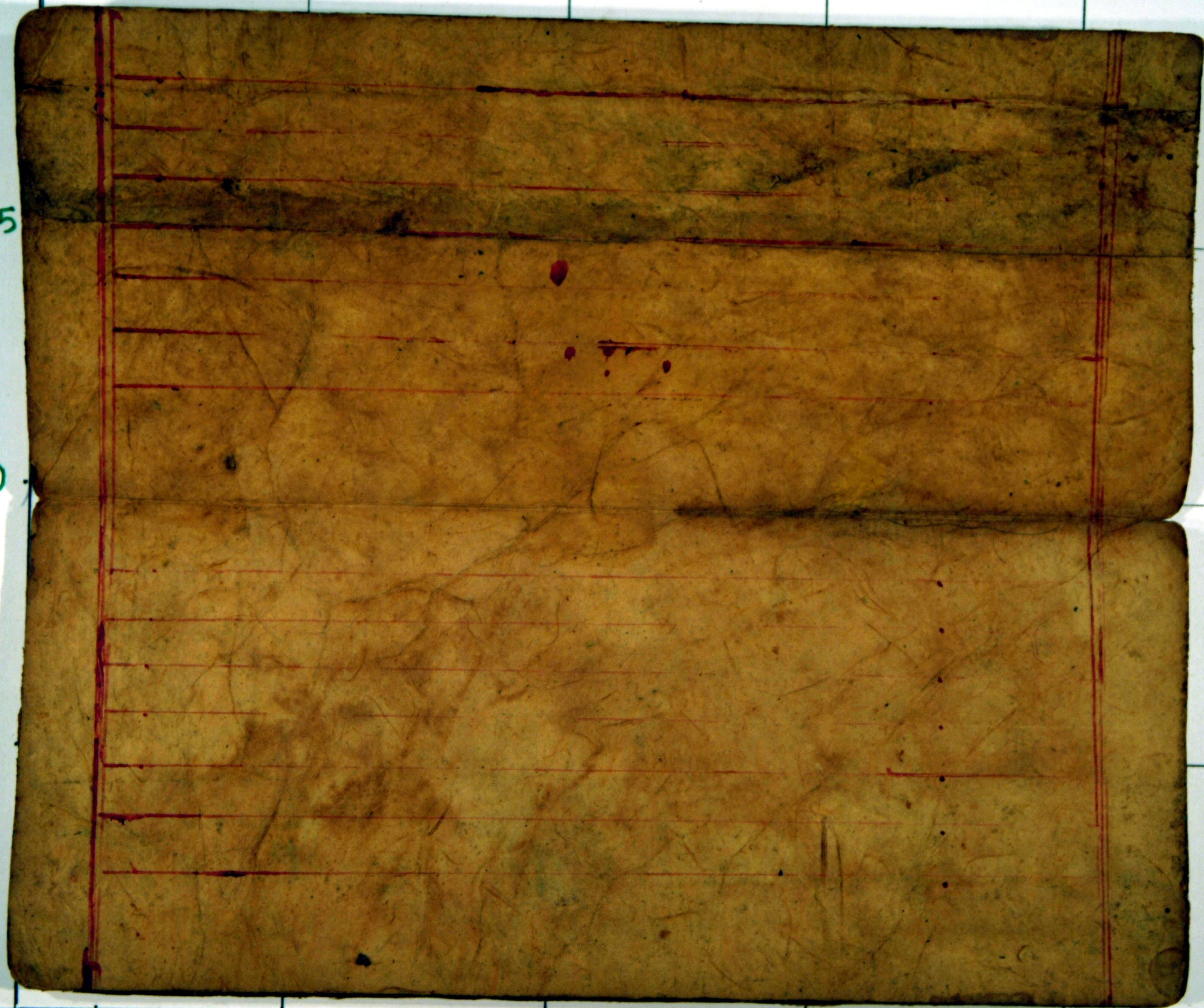
10

15

20

25

CENTIMETERS



20

15

10

5

0

5

10

15

20

25

CENTIMETERS



20

15

10

5

0

5

10

15

20

25

CENTIMETERS



20

15

10

5

0

5

10

15

20

25

CENTIMETERS



20

15

10

5

0

5

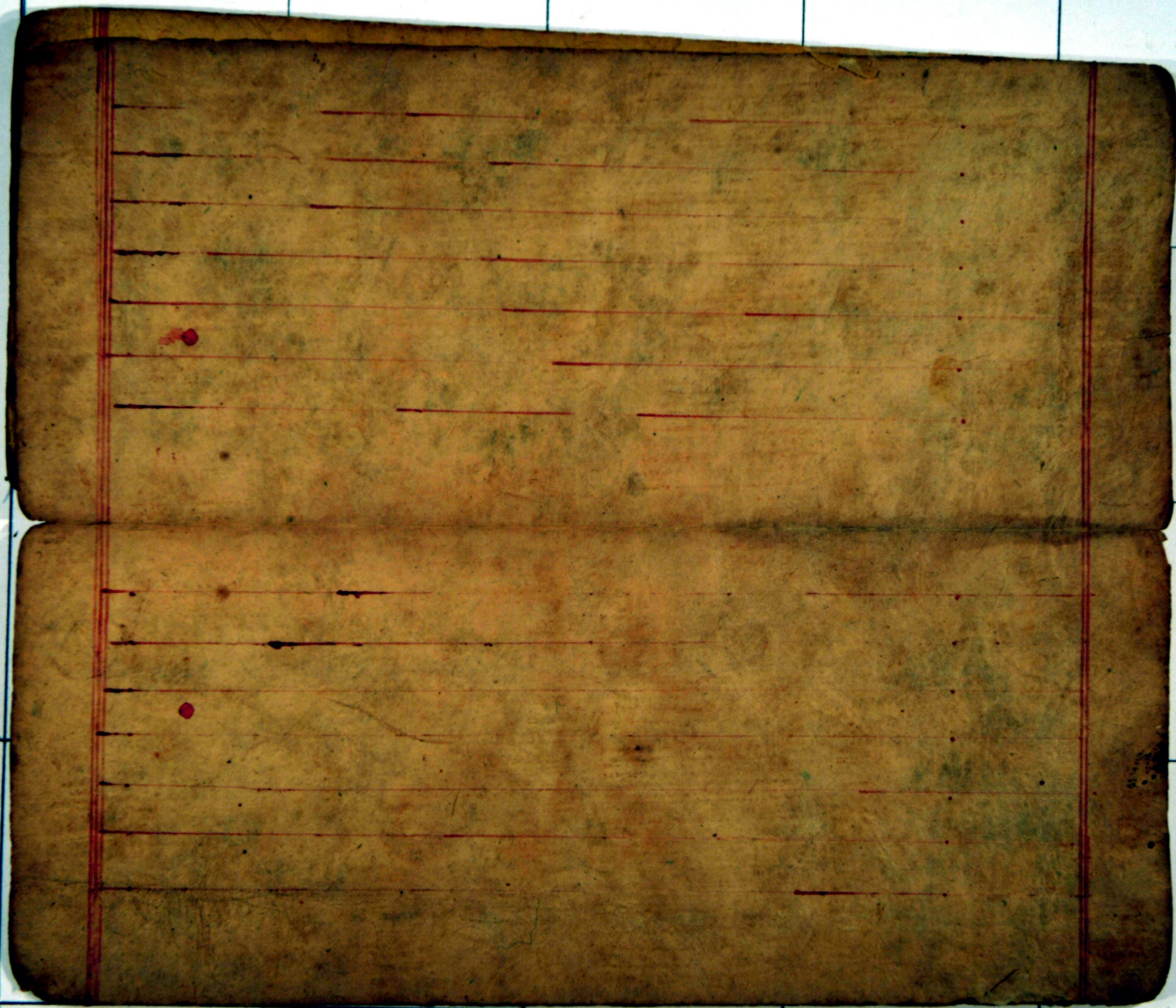
10

15

20

25

CENTIMETERS



20

15

10

5

0

5

10

15

20

25

CENTIMETERS

